Sem-6, DSE-3

Page No:
Date: / /

दिनकर-काव्य में राष्ट्र-भावना

आधुनिक युग के छायावादोत्तर युग में रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविताएँ पौरुष, ओज और क्रान्ति की वह वाणी है, जिसने भारतीयों में स्फूर्ति और उत्तेजना भर दी। दिनकर ने एक ओर युगसत्य के अंगारों को पेश किया तो दूसरी ओर देश के गौरवमय अतीत पर गर्व करने का इशारा किया। उनकी कविताओं में परतंत्र के जागरण का संगीत होने के साथ स्वतंत्र देश की प्राणशक्ति का उद्घोष है। यद्यपि दिनकरजी के काव्य में प्रेम और सौन्दर्य की कोमलता और मधुरता भी है तथापि अपनी क्रान्तिकारी भावना एवं वीरपूजा की सहज भावना के कारण वे 'राष्ट्रकवि' के रूप में संपूज्य हैं।

"रे रोक न युधिष्ठिर को यहाँ, जाने दे उनको स्वर्गधीर।
पर फिरा हमें गाण्डीव गदा, लौटा दे अर्जुन भीम वीर॥"

राष्ट्रकवि दिनकर छायावाद से प्रगतिवाद और प्रगतिवाद से राष्ट्रवाद की ओर अग्रसर हुए हैं। रेणुका, हुंकार, द्वन्द्वगीत, बापू, परशुराम की प्रतीक्षा, कोयल और कविता, प्रणभंग जैसे अनेक काव्य-संग्रहों में दिनकरजी की राष्ट्रीयता व्यक्त हुई है। 'संस्कृति के चार अध्याय' जैसी गद्य-कृति में भी राष्ट्रचेतना व्याप्त है। प्रारंभिक संग्रह 'हुंकार' के रचनाकाल में भी कवि ने देश की पीड़ित और शोषित जनता के स्वर को वाणी दी। —

"युगों से हम अनय का भार ढोते आ रहे हैं,
न बोली तू मगर, हम रोज मिटते जा रहे हैं।"

ओज और परिवर्तन के कवि दिनकर की राष्ट्रीय वाणी में एक ओर अतीत के प्रति मोह और वेदना का विस्तार है तो वर्तमान की असंगतियों के प्रति क्षोभ भी है। उनकी कई कविताओं में भारत के गौरवमय अतीत के स्मरण द्वारा वर्तमान को सँवारने का संदेश है। भारत राष्ट्र को परिभाषित करते कवि कहते हैं — "भारत है भावना, दाह जगजीवन का हरने की,
भारत है कल्पना मनुज को रागमुक्त करने की।"